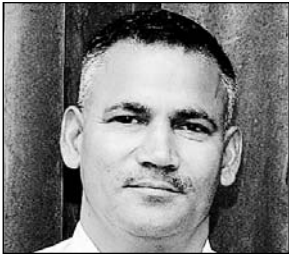


विचार बिन्दु

मूर्ति के समान मनुष्य का जीवन सभी ओर से सुन्दर होना चाहिए। –सुकरात

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥ -ईशावास्योपनिषद



प्रकाश चंद्र शर्मा

जैसे-जैसे दुनिया सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियों से जूझ रही है, सहकारिता एक ऐसी अवधारणा बनकर उभरी है जो इन चुनौतियों से सामूहिक रूप से निपटने का समाधान प्रस्तुत करती है। इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस 2025 की थीम “सहकारिता: एक बेहतर दुनिया के लिए समावेशी और टिकाऊ समाधान लाना” न केवल प्रेरणादायक है, बल्कि वैश्विक विकास के लिए सहयोग की शक्ति को रेखांकित भी करती है।

अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता दिवस पर विशेष

अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता दिवस 2025 - एक वैश्विक जागरूकता आंदोलन

भारत में सहकारिता आंदोलन की नींव 1945 में आर.जी. सराया की अध्यक्षता में गठित सहकारी आयोगना समिति ने रखी। इस समिति ने लोकतांत्रिक आर्थिक विकास के लिए सहकारी समितियों को सर्वाधिक उपयुक्त माध्यम माना। इसके बाद सहकारिता ने भारत के ग्रामीण, कृषि, उपभोक्ता और औद्योगिक क्षेत्रों में गहराई से अपनी जड़ें जमाईं।

सहकारिता एक विचार नहीं, एक व्यवहारिक व्यवस्था है, जो निम्न सात सिद्धांतों पर आधारित है:

- स्वैच्छिक और खुली सदस्यता
- लोकतांत्रिक सदस्य नियंत्रण
- सदस्य आर्थिक भागीदारी
- स्वायत्तता और स्वतंत्रता
- शिक्षा, प्रशिक्षण और सूचना
- सहकारी समितियों के बीच सहयोग
- समुदाय के प्रति चिंता

यह प्रणाली स्व-सहायता, स्व-जिम्मेदारी, लोकतंत्र, न्याय और एकजुटता के मूल्यों को बढ़ावा देती है। सहकारी समितियाँ केवल स्थानीय

समस्याओं का समाधान नहीं करतीं, बल्कि वे वैश्विक परिवर्तन का भी माध्यम बनती हैं। उदाहरण के लिए: कृषि क्षेत्र में: किसान सहकारी समितियाँ किसानों की उपज बेचने में मदद करती हैं और उन्हें बाज़ार में उचित मूल्य दिलाती हैं। उपभोक्ता क्षेत्र में: उपभोक्ता सहकारी समितियां सस्ती दरों पर गुणवत्तापूर्ण वस्तुएं उपलब्ध कराती हैं। वित्तीय सेवाएं: सस्ती दर पर ऋण उपलब्ध करवाकर सहकारी बैंकों ने आर्थिक समावेशन को बल दिया है। स्वच्छ ऊर्जा और आवास: अनेक देशों में सहकारी मॉडलों ने सस्ती, टिकाऊ और सामुदायिक ऊर्जा समाधान दिए हैं। 2025 का आयोजन क्यों विशेष है? इस बार का आयोजन दो वैश्विक पहलों से जुड़ा है:

- संयुक्त राष्ट्र का उच्च स्तरीय राजनीतिक मंच, जो सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की समीक्षा कर रहा है।
- सामाजिक विकास के लिए दूसरा विश्व शिखर सम्मेलन, जिसमें

सहकारी समितियों की भूमिका पर विमर्श होगा। इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन (ICA) द्वारा दुनिया भर के नागरिकों से अपील की गई है कि वे सहकारिता दिवस में भाग लें और जागरूकता बढ़ाएं कि सहकारी मॉडल कैसे एक बेहतर दुनिया की ओर ले जा सकता है।

3 मिलियन से अधिक सहकारी समितियाँ विश्वभर में सक्रिय हैं। दुनिया की लगभग 12 प्रतिशत आबादी इनमें किसी न किसी रूप में जुड़ी हुई है। शीर्ष 300 सहकारी संस्थाओं का कुल कारोबार लगभग 2,409 बिलियन अमेरिकी डॉलर है। सहकारी क्षेत्र 280 मिलियन लोगों को रोजगार या कार्य के अवसर देता है-जो वैश्विक कार्यबल का लगभग 10 प्रतिशत है। प्रतिशत

इस वर्ष का एक प्रमुख उद्देश्य युवाओं को सहकारी आंदोलन में जोड़ना और उद्देश्यपूर्ण नेतृत्व को प्रोत्साहित करना है। यह अवसर युवाओं को प्रेरित करता है कि वे न केवल सहकारी समितियों में भाग लें, बल्कि

उन्हें नेतृत्व भी प्रदान करें।

सहकारिता: पूंजी नहीं, व्यक्ति केंद्रित मॉडल सहकारी समितियाँ पूंजी पर नहीं, बल्कि लोगों पर केंद्रित होती हैं। यह प्रणाली धन के केंद्रीकरण को रोकती है और संसाधनों के समान वितरण को सुनिश्चित करती है। यह स्थानीय आपूर्ति, निर्णय प्रक्रिया में समुदाय की भागीदारी, और टिकाऊ विकास की दिशा में ठोस कदम है।

निष्कर्षतः – “सहकारिता केवल एक आर्थिक संरचना नहीं है, यह एक सामाजिक दर्शन है।” यह दर्शन हमें सिखाता है कि आपसी सहयोग से हम वैश्विक समस्याओं का समाधान खोज सकते हैं और एक समावेशी, न्यायपूर्ण तथा टिकाऊ समाज का निर्माण कर सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस 2025 न केवल सहकारिता की उपलब्धियों को पहचानने का दिन है, बल्कि यह भविष्य के निर्माण की दिशा में एक सामूहिक संकल्प का भी प्रतीक है।

—प्रकाश चंद्र शर्मा,

वरिष्ठ पत्रकार

जयपुर के मुकेश कुमार को दौसा जिले में लगे अंत्योदय शिविर में लाभ मिला

किसी भी व्यक्ति की सम्पत्ति विशेषकर जमीन उसकी और आने वाली पीढ़ियों के लिए रोजी-रोटी, आशियाने और सामाजिक स्वीकृति, भविष्य के स्थायित्व से जुड़ी होती है और इसी कारण इस पर अधिकार और पुरे काजजात बनाये रखना बड़ी चुनौती होती है। जयपुर के मुकेश ने अपने जीवनभर की कमाई से हुई बचत से दौसा जिले में जमीन खरीदी, लेकिन वहां कब्जा लेने गया तो उसके काफी हिस्से पर अतिक्रमण मिला। इससे वह निराश हो गया लेकिन ऐसे ही निराश, कमजोर लोगों को उनका वाजिब हक दिलवाने के लिए भजनलाल सरकार पं. दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय सम्बल पखवाड़ा संचालित कर रही है। इन शिविरों में हर वर्ग के व्यक्ति को फायदा मिल रहा है। ऐसे ही शिविर ने चिन्ता दूर की मुकेश कुमार की। दौसा जिले की बसवा पंचायत समिति की चौबड़ी वाला ग्राम पंचायत में लगा शिविर उनकी बरसों पुरानी परेशानी खत्म करने वाला साबित हुआ। शिविर के दौरान राजस्व प्रशासन ने उनकी जमीन से सालों पुराना उलझा हुआ अतिक्रमण हटाकर जमीन पर पत्थरगढ़ी करवाकर राहत दी।

जयपुर में निवारक इलाके के रहने वाले मुकेश कुमार वेद ने कोलेश्वर खुर्द में कई साल पहले जमीन खरीदी थी। इस जमीन पर पड़ोसी खातेदारों के

बीच मतभेद चल रहे थे, जिन्होंने उनकी जमीन के कुछ हिस्से पर अतिक्रमण कर रखा था। मुकेश कुमार ने रेकार्ड के मुताबिक उनसे अतिक्रमण हटवाने के काफी प्रयास किए लेकिन कामयाबी नहीं मिली। अन्त में उन्होंने उपखण्ड अधिकारी के राजस्व न्यायालय में वाद दायर किया। इस दौरान वह जयपुर से बार-बार आने-जाने से भी काफी परेशान होते रहे।

मुकेश कुमार को जब ग्राम पंचायत में शिविर लगने की जानकारी मिली तो उन्होंने प्रशासन से सीमा ज्ञान कराकर पत्थरगढ़ी कराने का आग्रह किया। इस पर बसवा उपखंड अधिकारी रेखा मीणा ने संवेदनशीलता दिखाते हुए राजस्व टीम को प्रकरण का नियमानुसार निस्तारण करवाने के निर्देश दिए। बसवा तहसीलदार अन्नू शर्मा एवं उनकी टीम ने अतिक्रमियों से समझाझर की और सीमा ज्ञान करवाकर पत्थरगढ़ी की कार्यवाही पूरी करवाई। प्रशासन का शांतिपूर्ण पत्थरगढ़ी करवाना प्रशंसनीय कार्य :- अपनी जमीनी की कार्यवाही होने से प्रसन्न मुकेश कुमार ने कहा कि प्रशासन ने गांव के कई लोगों के विरोध के बावजूद समझाइश कर शांतिपूर्ण ढंग से पत्थरगढ़ी का कार्य करवा दिया जो बहुत ही प्रशंसनीय है। उन्होंने यह अभियान चलाने के लिए राज्य सरकार का आभार व्यक्त करते हुए उपखंड



अधिकारी रेखा मीणा, तहसीलदार अन्नू शर्मा, गुवा कटला नायब तहसीलदार बाबूलाल मीणा, पटवारी सुमेर सिंह गुर्जर एवं उनकी पूरी राजस्व टीम की सराहना की।

दो भाइयों के आपसी रजाबंदी से हुआ जमीन बंटवारा :-बैजुपाड़ा पंचायत समिति की निहालपुरा ग्राम पंचायत में लगे शिविर के दौरान राजस्व टीम ने दो भाइयों के आपसी रजाबंदी से जमीन का बंटवारा कर राहत पहुंचाई। रामजीलाल एवं हरिराम बलाई को जब गांव में शिविर लगने की जानकारी मिली तो दोनों भाइयों ने ठीकरिया गांव में स्थित कृषि भूमि का

आपसी रजाबंदी से विभाजन कराने के लिए शिविर प्रभारी के समक्ष प्रार्थना-पत्रा प्रस्तुत किया। शिविर प्रभारी ने तुरंत पटवारी को मौके पर भेजकर उनका विभाजन प्रस्ताव तैयार कराया और इसे शिविर में ही स्वीकृत कर दिया। कास्तकारी अधिनियम 1955 की धारा-53 के तहत वर्षों बाद जमीन का विभाजन होने से दोनों भाई काफी खुश नजर आए।

बहरावंडा तहसील में गढ़ ग्राम पंचायत में आयोजित शिविर के दौरान चौध्या बैरवा के पिता का नाम राजस्व रेकार्ड में दुरुस्त कर राहत दी। चौध्या ने रेकार्ड में पिता का नाम गलत होने

■ **प्रशासन ने सालों पुराना विवाद समझाइश से निपटाकर जमीन की पत्थरगढ़ी करवाई, अब भूमि आई मुकेश के कब्जे में, मनमुटाव खत्म हुआ**

की वजह से हो रही कठिनाइयों का जिक्र करते हुए नाम दुरुस्तीकरण के लिए आवेदन किया। राजस्व टीम ने मौके पर ही संबंधित रेकार्ड की जांच कर इनके पिता का नाम जो पहले राजस्व रेकार्ड में भोल्या था, दुरुस्त कर मौल्य किया गया।

गांगलियावास में 32 लोगों को मिले आयुष्मान कार्ड :-रामगढ़ पंचवारा ब्लॉक के गांगलियावास ग्राम पंचायत में आयोजित शिविर के दौरान 32 लोगों को आयुष्मान कार्ड वितरित किए गए। आयुष्मान कार्ड मिलने के बाद शंकर लाल सैनी ने कहा कि अब उसे बीमार होने पर सरकार ने खर्चें की चिंता से मुक्त कर दिया है। उन्हें इस कार्ड के वन पर अच्छे अस्पतालों में बेहतर मेडिकल सुविधा नि:शुल्क मिल सकेगी।

सोहन लाल, सहायक निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय दौसा।

इन दोनों शब्दों को यदि हम अब हटा भी दें तो भी हमारा संविधान समाजवादी और धर्म निरपेक्ष राज्य ही माना जावेगा। पहले वाला संशोधन असंवैधानिक था तो क्या हम पुनः उन दो शब्दों को निकाल कर असंवैधानिक संशोधन करें? पूर्व संशोधन अवैध था अर्थात् शून्य था। हमारा संविधान पूर्ण है। पूर्ण से कुछ भी निकला जावे या घटाया जावे फिर भी पूर्ण ही रहता है। यह ईशोपनिषद का शान्ति मंत्र है।

थे ने समाजवाद को पश्चिमी समाजवाद और धर्म निरपेक्षता को विदेशी विचारधारा माना है। वर्तमान समाजवादी पार्टी ऐसे समाजवाद को तुट्टीकरण वादी मानती है। दत्तात्रेय होसबले वे केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह की उक्त दो शब्दों के उद्देशिका में जोड़े जाने के बाबत विवाद पर टिप्पणी का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। इस पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी की प्रतिक्रिया भी आ चुकी है। अपनी प्रतिक्रिया में राहुल गांधी ने कहा कि दत्तात्रेय को इस बात की चिड़ है कि वे (राहुल गांधी) संविधान, समानता व धर्म निरपेक्षता और न्याय की बात करते हैं। राहुल गांधी ने अपनी प्रतिक्रिया में यह भी कहा कि संघ और भाजपा का असली मकसद संविधान जैसे शक्तिशाली हथियार को दलितों, पिछड़ो व गरीबों से छीनना है ताकि उन्हें फिर से गुलाम बनाया जा सके। वस्तुतः आज की राजनीति में सहिष्णुता कहीं खो गई है। वर्तमान में संसार भर में धार्मिक सहिष्णुता के विरुद्ध आचरण हो रहा है। जबकि धर्म तो सहनशीलता व सहिष्णुता सिखाता है। हमारे संविधान में धर्म निरपेक्षता राज्य का मुख्य सूत्र है। राज्य से यह अपेक्षा है कि धर्म के मामले में वह हस्तक्षेप नहीं करेगा। देश में सभी धर्मों के लोगों को अन्तःकरण की स्वतंत्रता है। हिन्दू धर्म, मुस्लिम धर्म व ईसाई धर्मों में उन्माद की घटनायें देखने को मिलती हैं। कुछ हिन्दू कट्टर पंथी भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाना चाहते हैं। तो कहीं मुस्लिम कट्टर पंथी आवाज दे रहे हैं खुद के दूत पैगम्बर का अपमान सहन नहीं करेंगे। हमें सावधान रहना है, धर्म निरपेक्षता के नाम पर उन्माद की संभावित आंधी को रोकना होगा। हमें अपनी गंगा जमुनी संस्कृति को जीवित रखना है। हमारी धार्मिक सहिष्णुता इतनी कमजोर नहीं है कि कुछ लोगों के गलत आचरण से वह कमजोर पड़ जावे। हमें हमारी इस संस्कृति को शान के साथ सिर ऊँचा कर संसार के सामने श्रद्धा से खड़ी रखना है।

उपरोक्त परिस्थितियों के संदर्भ में हमारे सामने कई महत्वपूर्ण प्रश्न उठते हैं, जिन पर हमें गम्भीरता से विचार करना है। दो मुख्य प्रश्न हैं (1) क्या संविधान की उद्देशिका में संशोधन किया जा सकता है? (2) क्या उक्त दो शब्द ‘सामाजिक’ धर्म निरपेक्षता’ को संविधान की उद्देशिका में जोड़ भी दिये गये हैं, तो क्या इस कारण उद्देशिका का पवन भावना पर विपरीत असर हुआ है अतः उसे निकालना अति आवश्यक है?

“समाजवाद” व धर्म निरपेक्षता’ शब्दों को सन 1976 में संविधान की उद्देशिका में जोड़ा गया था। सम्भवतः ये दोनों शब्द संविधान के प्रावधानों को पहले ही से थे, को, अधिक महत्व देने के प्रयोजन से जोड़े गये थे, यद्यपि इसकी आवश्यकता नहीं थी। दोनों शब्दों को जोड़ने से पहले भी यानी इनके अभाव में भारत एक समाजवादी धर्म निरपेक्ष राज्य था और भविष्य में भी रहेगा। इन शब्दों को आपातकाल के समय जोड़ा गया था यह सत्य घटना है। इन शब्दों को उद्देशिका में दर्शाना विषय की गम्भीरता को इंगित करता है। नीति निदेशक तत्वों के अध्याय- पट में यह बतलाया है कि राज्य का कर्तव्य है कि समाज को समाजवाद की ओर ले जाया जावे और समानता व समता के आधार पर देश को मजबूत बनाया जावे। इसी प्रकार धर्म निरपेक्षता के संबंध में देश की जनता से अपेक्षा की है कि देश के प्रत्येक नागरिक को विचारों की अभिव्यक्ति व धर्म, विश्वास, पूजा विधि को अपनाने की स्वतंत्रता होगी।

माननीय सर्वोच्च न्यायालय अपने निर्णयों के आधार पर यह स्पष्ट कर दिया गया है कि उद्देशिका में संशोधन नहीं किया जा सकता। संविधान की उद्देशिका संविधान का सार है और शाश्वत है। संशोधन से पूर्व भी भारत एक समाजवादी, धर्म निरपेक्ष गणतंत्र था और इसके बाद भी भारत समाजवादी धर्म निरपेक्ष राज्य है। कोई भी विपरीत असर इन शब्दों के जोड़ने के कारण भारत के विकास पर नहीं हुआ है। भाजपा ने कोई भी कानूनी कदम इन शब्दों को हटाने हेतु अभी तक नहीं उठाया, क्योंकि संशोधन के लिये उसके पास दोनों सदनों में दो तिहाही मत संभवतः नहीं है।

इन दोनों शब्दों को यदि हम अब हटा भी दें तो भी हमारा संविधान समाजवादी और धर्म निरपेक्ष राज्य ही माना जावेगा। पहले वाला संशोधन असंवैधानिक था तो क्या हम पुनः उन दो शब्दों को निकाल कर असंवैधानिक संशोधन करें? पूर्व संशोधन अवैध था अर्थात् शून्य था। हमारा संविधान पूर्ण है। पूर्ण से कुछ भी निकला जावे या घटाया जावे फिर भी पूर्ण ही रहता है। यह ईशोपनिषद का शान्ति मंत्र है।

संशोधन करना गलत कदम था। गलती को स्वीकार करने में ही समस्या का समाधान है। सबको सन्मति दे भगवान!

-अतिथि सम्पादक, पानाचन्द जैन, पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

राशिफल

शुक्रवार 4 जुलाई, 2025

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत् 2082, चित्रा नक्षत्र सायं 4:50 तक, शिवयोग सायं 7:35 तक, कौलव करण सायं 4:32 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-तुला, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरु-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में। आज रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात है। आज भडल्य़ा नवमी है। आज गुप्त नवरात्रा समाप्त होंगे। आज श्री हरि जयन्ती है। **श्रेष्ठ चौघड़िया:** चर सूर्योदय से 7:24 तक, लाभ-अमृत 7:24 से 10:48 तक, शुभ 12:31 से 2:13 तक, चर 5:38 से सूर्यास्त तक। **राहूकाल:** 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 5:41, सूर्यास्त 7:20



मेघ

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।



तुला

व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नौकरिपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। घर-परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



वृष

मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



वृश्चिक

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।



मिथुन

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरिपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



धनु

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिएदिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



कर्क

घर-परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।



मकर

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।



सिंह

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।



कुंभ

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वातां सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।



कन्या

आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लगेगे। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।



मीन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में परेशानी हो सकती है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।